हरिभूमि
वनांचल भूमि
रायपुर, शनिवार 24 अक्टूबर 2026
बस्तर | दंतेवाड़ा | बीजापुर | सुकमा | कांकेर | कोण्डागांव | नारायणपुर

RERA REGISTRATION NO. PCGRERA250518000017

जगदलपुर तेज़ी से बढ़ रहा है, और आप?

आज ही निवेश करें अपने बेहतर भविष्य के लिये।
अपना मनपसंद आवासीय प्लॉट 90% फाइनेंस के साथ

ASHOKA LANDSCAPES



600 से 3000 वर्गफीट तक
रेरा रजिस्टर्ड आवासीय प्लाट्स

महिलाओं के लिये 100% रजिस्ट्री फ्री*

तत्काल फाइनेंस | तत्काल रजिस्ट्री | तत्काल पजेशन

- 24x7 Security
- Gated Community
- Modern Landscaped Garden
- Attractive Entrance Gate
- Well Developed Roads
- 24-Hour Water Supply
- Systematic Electrification
- Sewage Treatment Plant


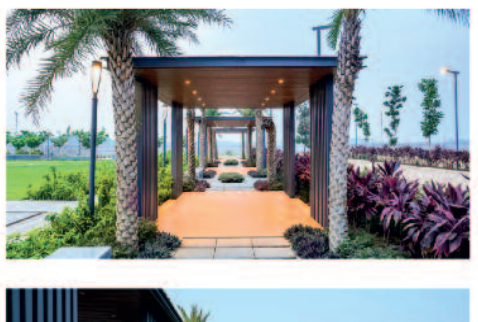

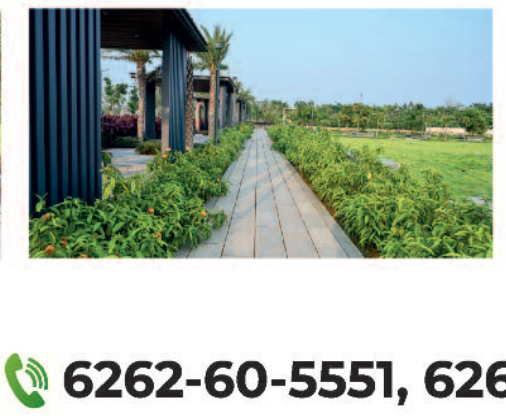


ALL ACTUAL PHOTOGRAPHS

*नियम एवं शर्तें लागू।

PRITHVI DEVELOPERS

साइट: नगरनार ओडिशा राजमार्ग 6262-60-5551, 6262-60-5552

जगदलपुर : लुंकड़ बिल्डिंग, जैन मंदिर रोड, जगदलपुर

ई मेल : prithviprojects@gmail.com | वेबसाइट : prithvidevelopers.in

SCAN FOR LOCATION

खबर संक्षेप

188वीं बटालियन सीआरपीएफ ने मनाया पुलिस स्मृति दिवस

कोण्डागांव। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल सीआरपीएफ की 188वीं बटालियन द्वारा बुधवार को पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय राजमार्ग–30 स्थित शहीद स्मारक में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। कमांडेंट मदन मोहन के दिशा–निर्देशन एवं मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर जवानों को श्रद्धापूर्वक याद किया गया। कार्यक्रम के दौरान द्वितीय कमान अधिकारी नीतीन्द्र नाथ ने शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित कर वीर जवानों को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर गार्ड द्वारा शहीदों के सम्मान में सलामी दी गई। उपस्थित अधिकारियों एवं जवानों ने दो मिनट का मौन धारण कर बलिदानियों को नमन किया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में द्वितीय कमान अधिकारी नीतीन्द्र नाथ ने जवानों को संबोधित करते हुए पुलिस स्मृति दिवस के ऐतिहासिक महत्व की जानकारी दी।

सशक्त नारी, युवा उड़ान थीम पर मनेगा राज्योत्सव

कोण्डागांव। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस पर जिले में इस वर्ष राज्योत्सव का आयोजन सशक्त नारी, युवा उड़ान थीम पर किया जाएगा। राज्योत्सव की तैयारियों को लेकर कलेक्टर नुपूर राशि पन्ना के निर्देशानुसार जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अविनाश भोई ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में साप्ताहिक समय–सीमा की बैठक ली। बैठक में उन्होंने राज्योत्सव की तैयारियों, सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों सहित विभिन्न शासकीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्री भोई ने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय में राज्योत्सव का आयोजन किया जाएगा। इस वर्ष आयोजन की मुख्य थीम 'सशक्त नारी, युवा उड़ान' निर्धारित की गई है। उन्होंने सभी विभागों को इसी थीम पर आधारित प्रदर्शनियां लगाने के निर्देश दिए।

जिले में आकार ले रहा बांस का परिधान, मनमोहन नाग रच रहे हस्तशिल्प की नई इबारत

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोंडागांव

नागपुर में 1 नवंबर को आयोजित फैशन शो में सोना सोड़ी पहनेंगी बांस से तैयार विशेष परिधान

अपनी विशिष्ट हस्तशिल्प कला के लिए देश-दुनिया में खास पहचान रखने वाला बस्तर का कोंडागांव अब बांस से वस्त्र और परिधान तैयार करने की दिशा में एक ऐतिहासिक और अभिनव प्रयोग करने जा रहा है। बांस हस्तशिल्प के क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक का लंबा अनुभव रखने वाले जाने-माने शिल्पकार मनमोहन नाग इन दिनों बांस को पहनने योग्य परिधान का स्वरूप देने में पूरी तन्मयता से जुटे हैं। उनका यह प्रयास कोंडागांव की पारंपरिक कला को फैशन की आधुनिक दुनिया से जोड़ने की एक मिल का पत्थर साबित होने वाली पहल है।

नागपुर के फैशन शो में दिखेगा जलवा : इस अनूठे प्रयोग के तहत आगामी 1 नवंबर को महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित फैशन शो में मंचीय कला की जानी-पहचानी कलाकार सोना सोड़ी बांस से निर्मित विशेष परिधान पहनकर मंच पर उतरेंगी। सोना सोड़ी, राज्य पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात भित्तिचित्रकार दुर्जन सोड़ी की सुपुत्री हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय मंच के लिए बांस के परिधान को चुना है और इसे तैयार करने की जिम्मेदारी अनुभवी शिल्पकार मनमोहन नाग को सौंपी है। फिलहाल मनमोहन इस बड़ी चुनौती को अपनी कला के इजहार का अवसर मानते हुए दिन-रात इसे आकार देने में लगे हैं।

बचपन से रहा है कला से गहरा नाता : कोंडागांव के आलबेड़ा पारा निवासी मनमोहन नाग का हस्तशिल्प से जुड़ाव बचपन से ही रहा है। उन्होंने अपने पिता गोवर्धन नाग को लचीले प्लास्टिक केन धागों से कलात्मक वस्तुएं बनाते देख यह हुनर आत्मसात किया था। युवावस्था में उन्हें वर्ष 1977 के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित श्रेष्ठ हस्तशिल्पी जयदेव बघेल का सानिध्य प्राप्त हुआ, जिससे उनकी कला को एक नई दिशा मिली।

कोंडागांव के मुकुट में जुड़ेगा नया मोरपंख

कोंडागांव पहले से ही बेलमेटल, ढोकरा और काष्ठ शिल्प के लिए विश्वविख्यात है। यदि यह बांस के परिधान का प्रयोग सफल रहता है, तो हस्तशिल्प नगरी के इतिहास में एक और स्वर्णिम अध्याय जुड़ जाएगा। इससे न केवल स्थानीय शिल्पकारों के लिए रोजगार के नए द्वार खुलेंगे, बल्कि बांस कला को वैश्विक फैशन जगत में एक नई पहचान भी मिलेगी। नागपुर के मंच पर प्रदर्शित होने वाले इस अनूठे प्रयोग पर पूरे छत्तीसगढ़ की निगाहें टिकी हुई हैं।



पारंपरिक कला को आधुनिक फैशन से जोड़ने की चुनौती : बांस को वस्त्र का रूप देना मनमोहन नाग के करियर का एक नया और चुनौतीपूर्ण अध्याय है। उनके सामने बांस की प्राकृतिक कठोरता, बनावट और उसकी खूबियों को सहज परिधान में ढालने की चुनौती है। यह प्रयोग इस बात का प्रतीक है कि कैसे स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक कौशल को आधुनिक डिजाइन के साथ जोड़ा जा सकता है।

खेत बचाओ अभियान–रबी 2026 शुरू, किसानों की आय बढ़ाने की अनूठी पहल

कोण्डागांव जिले में धान कटाई के बाद रबी फसलों की खेती को मिलेगा बढ़ावा

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोण्डागांव

जिले के किसानों की आय में वृद्धि करने, उपलब्ध कृषि संसाधनों का समुचित उपयोग सुनिश्चित करने और रबी फसलों के रकबे को बढ़ाने के लिए 22 अक्टूबर से 30 नवंबर 2026 तक खेत बचाओ अभियान–रबी 2026 का संचालन किया जा रहा है। कृषि विभाग की विशेष टीमें जिले के सभी विकासखंडों—कोण्डागांव, माकड़ी, फरसगांव, विश्रामपुरी–बड़ेराजपुर और केशकाल की प्रत्येक ग्राम पंचायत में पहुंचकर किसानों को वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों से रूबरू करा रही हैं।

- किसानों को दी जाएगी वैज्ञानिक कृषि तकनीकों की जानकारी

खाली खेतों में तिलहन और दलहन की बहार

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य धान की कटाई के पश्चात खाली रहने वाले खेतों का बेहतर उपयोग करना है। किसान खेतों की नमी का लाभ उठाकर तोरिया, सरसों, अलसी जैसी तिलहन तथा चना, तीवरा और मटर जैसी दलहनी फसलों की खेती कर सकते हैं। इससे किसानों को अतिरिक्त आमदनी का जरिया मिलेगा।



गांव–गांव में किसान चौपाल और मैदानी प्रदर्शन

अभियान की 40 दिवसीय अवधि में हाट–बाजारों एवं ग्राम पंचायतों में किसान चौपाल आयोजित की जाएंगी। इनमें कृषि वैज्ञानिक किसानों को कीट एवं रोग प्रबंधन सहित रबी फसलों से संबंधित समस्याओं का समाधान बताएंगे। साथ ही उन्नत कृषि यंत्रों के उपयोग और प्राकृतिक खेती की तकनीकों का खेतों में प्रदर्शन किया जाएगा।

मृदा स्वास्थ्य और जल संरक्षण पर जोर

अभियान के तहत कृषि वैज्ञानिक किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर संतुलित उर्वरक इस्तेमाल करने और रासायनिक खादों के विकल्प के रूप में जैविक खाद व वर्मीकंपोस्ट अपनाने की सलाह दे रहे हैं। इसके साथ ही, पठारी और ढलान वाले क्षेत्रों में जल उपयोग दक्षता बढ़ाने, तालाब व बोरवेल के विवेकपूर्ण इस्तेमाल तथा कम पानी वाली फसलों के चयन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

जल संरक्षण और मौसम आधारित कृषि सलाह

जिले के पठारी एवं ढलान वाले क्षेत्रों में जल उपयोग दक्षता बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। किसानों को तालाब, डबरी एवं बोरवेल जैसे जल स्रोतों का विवेकपूर्ण उपयोग करने तथा कम पानी में तैयार होने वाली रबी फसलों के चयन की जानकारी दी जाएगी। कृषि विज्ञान केंद्र, कोण्डागांव द्वारा मौसम के अनुरूप साप्ताहिक कृषि सलाह किसानों तक मोबाइल और स्थानीय बैठकों के माध्यम से पहुंचाई जाएगी।

पात्र किसानों को योजनाओं से जोड़ने की पहल – अभियान के अंतर्गत पात्र किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड केसीसी उपलब्ध कराने, किसान आईडी बनाने तथा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत रबी फसलों के बीमा संबंधी लाभों एवं अंतिम तिथि की जानकारी देने पर भी जोर दिया जाएगा। विभागीय टीमें किसानों को योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करेंगी।

किसानों से अभियान में सहभागिता की अपील

उप संचालक कृषि, जिला कोण्डागांव ने जिले के सभी किसान भाई–बहनों से अपील की है कि वे धान कटाई के बाद अपने खेतों को खाली न छोड़ें, मिट्टी की जांच कराएं तथा रबी फसलों की खेती के लिए नजदीकी कृषि विस्तार अधिकारी या कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क करें। वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाकर किसान कम लागत में बेहतर उत्पादन और अधिक आय प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

केशकाल बाईपास निर्माण में तेजी



केशकाल। लंबे समय से प्रतीक्षित केशकाल बाईपास सड़क का निर्माण कार्य तेजी से हो रहा है। विधायक नीलकंठ टेकाम ने निर्माण स्थल पर पहुंचकर कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया और संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों को निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए, ताकि लोगों को जल्द से जल्द जाम की समस्या से राहत मिल सके।

- विधायक नीलकंठ टेकाम ने लिया जायजा, घाट में जाम से मिलेगी राहत

विधायक टेकाम ने सबसे पहले केशकाल घाट के नीचे की ओर चल रहे निर्माण कार्य का पैदल निरीक्षण किया। इसके बाद गोल्डी ढाबा के पास से शुरू होकर जंगल के भीतर तक चल रहे कार्य का जायजा लिया। उन्होंने गढ़सिल्यारा बाईपास सड़क पर तैनात मशीनों और निर्माण कार्य में उपयोग किए जा रहे संसाधनों का भी निरीक्षण किया। इस दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) के कर्मचारी उपस्थित थे।

बाईपास निर्माण से जाम की समस्या से मिलेगी राहत : केशकाल घाट राष्ट्रीय राजमार्ग-30 का एक महत्वपूर्ण मार्ग है, जहां आए दिन वाहनों के दबाव के कारण जाम की स्थिति बनती है। इससे यात्रियों, मालवाहक वाहनों और स्थानीय लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में बाईपास सड़क का निर्माण पूरा होने के बाद भारी वाहनों को वैकल्पिक मार्ग मिलने और घाट पर यातायात का दबाव कम होने की उम्मीद है। इससे आवागमन अधिक सुगम और सुरक्षित हो सकेगा। उल्लेखनीय है कि केशकाल बाईपास सड़क की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी।

नीलकंठ टेकाम ने कोंडागांव कलेक्टर के पद पर रहते हुए भी इस सड़क की जरूरत को लेकर गंभीरता दिखाई थी। अब विधायक के रूप में उनके द्वारा निर्माण कार्य का निरीक्षण किए जाने और तेजी लाने के निर्देश दिए जाने से परियोजना को लेकर लोगों की उम्मीदें बढ़ी हैं। फिलहाल सड़क के दोनों ओर से निर्माण कार्य जारी है।

खुटपारा सोनाबाल के छात्रों ने सुना राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का लाइव संबोधन

कोण्डागांव। बस्तर दशहरा के समापन का सीधा प्रसारण प्राथमिक शाला खुटपारा सोनाबाल में छात्रों और शिक्षकों ने देखा और सुना। जगदलपुर में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमेन डेका एवं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के संबोधन का लाइव प्रसारण विद्यालय में किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को बस्तर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रम से जुड़ने का अवसर मिला। विकासखंड कोण्डागांव के मर्दापाल तहसील अंतर्गत संकुल सोनाबाल की प्राथमिक शाला खुटपारा सोनाबाल में यूट्यूब के माध्यम से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण दिखाया गया। इसके लिए मोबाइल फोन और पोर्टेबल साउंड सिस्टम का उपयोग किया गया, ताकि विद्यार्थी कार्यक्रम को स्पष्ट रूप से देख और सुन सकें।

- बस्तर दशहरा के समापन का विद्यालय में सीधा प्रसारण, छात्रों ने वंदे मातरम् का किया सामूहिक गायन

विद्यार्थियों ने जगदलपुर में आयोजित बस्तर दशहरा समापन समारोह के दौरान राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल श्री डेका और मुख्यमंत्री श्री साय के संबोधन को ध्यानपूर्वक सुना। शिक्षकों ने इस अवसर को विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक बताया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को विश्व प्रसिद्ध बस्तर दशहरा के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बस्तर दशहरा क्षेत्र की समृद्ध परंपराओं और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण प्रतीक है। ऐसे कार्यक्रमों से बच्चों को अपनी संस्कृति और विरासत के बारे में जानने का अवसर मिलता है।



कार्यक्रम के समापन अवसर पर विद्यार्थियों ने लाइव प्रसारण के साथ राष्ट्रगीत वंदे मातरम् का सामूहिक गायन किया। इस दौरान विद्यालय में उत्साह और देशभक्ति का वातावरण रहा। विद्यालय के प्रधान अध्यापक हितेंद्र कुमार श्रीवास एवं सहायक शिक्षक रूखमणी साहू ने विद्यार्थियों को बस्तर दशहरा समापन समारोह और लाइव प्रसारण से संबंधित संक्षिप्त जानकारी दी।

मतदाता सूची का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭ कोण्डागांव

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा फोटोयुक्त मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के लिए एक जनवरी 2027 को अर्हता तिथि निर्धारित करते हुए कार्यक्रम जारी किया गया है। इस संबंध में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती नुपूर राशि पन्ना के निर्देशानुसार जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अविनाश भोई ने बुधवार को जिला कार्यालय के सभाकक्ष में बैठक ली। बैठक में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों सहित सभी निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एवं सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में बताया गया कि विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के अंतर्गत मौजूदा फोटोयुक्त मतदाता सूची को अद्यतन किया जाएगा। इसका मुख्य उद्देश्य एक जनवरी 2027 तक 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले सभी पात्र नागरिकों, विशेषकर पहली बार मतदाता बनने वाले युवाओं के नाम मतदाता सूची में शामिल करना है।

पुनरीक्षण के दौरान मतदाता सूची में दर्ज मृत व्यक्तियों, अन्यत्र स्थानांतरित मतदाताओं, दोहरे नामों एवं अन्य अपात्र प्रविष्टियों को नियमानुसार हटाया जाएगा। इसके साथ ही मतदाताओं के नाम, पता, आयु और फोटो सहित अन्य विवरणों में त्रुटियों का सुधार किया जाएगा।

12 नवंबर से 11 दिसंबर तक लिए जाएंगे दावे–आपत्तियां

मतदाता सूची में नाम जोड़ने, संशोधन कराने तथा अन्य आवश्यक सुधार के लिए 12 नवंबर से 11 दिसंबर तक दावे एवं आपत्तियां प्राप्त की जाएंगी। प्राप्त आवेदनों और आपत्तियों का निराकरण 28 दिसंबर तक किया जाएगा। विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण की प्रक्रिया पूरी होने के बाद चार जनवरी 2027 को अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन किया जाएगा। इस प्रक्रिया का उद्देश्य मतदाता सूची को शुद्ध, पारदर्शी, अद्यतन एवं त्रुटिरहित बनाना है। 18 वर्ष के युवा प्रपत्र–6 से कर सकेंगे आवेदन – एक जनवरी 2027 की स्थिति में 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले पात्र भारतीय नागरिक मतदाता सूची में अपना नाम जुड़वाने के लिए प्रपत्र–6 में आवेदन कर सकेंगे। पहली बार मतदाता बनने वाले युवाओं को इस प्रक्रिया का लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

पेज 11 के शेष

विकसित भारत बनाने में ...

में 100 साल लगते हैं, जंगल कुदरत की देन है, लेकिन हमारे आसपास के खेत और बंजर जमीन में पेड़ पौधे लगाकर हम वातावरण को स्वच्छ सुन्दर रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगभग 2 माह पूर्व राष्ट्रपति भवन में बस्तर के प्रतिनिधिमंडल से मेरी मुलाकात हुई थी। इसमें बस्तर पंडुम के विजेताओं के साथ बस्तर के परगना मांझी और चालकी भी शामिल थे। बस्तर पंडुम जैसे आयोजन जनजातीय युवाओं को अपनी संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि बस्तर के युवा ओलम्पिक में मेडल लाने की क्षमता रखते हैं। जनजातीय समाज में अपार प्रतिभा और संभावनाएं हैं। राष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समस्या से मुक्ति और सुरक्षा एवं विकास के क्षेत्र में हो रहे सकारात्मक बदलावों का उल्लेख करते हुए केंद्र और राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि नक्सलवाद की पीड़ा से मुक्त होकर यह क्षेत्र प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि बस्तर के युवा और जनजातीय समुदाय के लोग अपनी प्रतिभा, परिश्रम और सहभागिता से देश की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि जंगल, पहाड़ और प्राकृतिक संसाधन अमूल्य धरोहर हैं। इनका उपयोग आवश्यकता के अनुरूप करते हुए इनके संरक्षण और क्षतिपूर्ति की जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए। बस्तर दशहरा के पारंपरिक अनुष्ठानों का उल्लेख करते हुए राष्ट्रपति ने कुटुम्ब जात्रा के माध्यम से ग्राम देवी-देवताओं की विदाई तथा 27 अक्टूबर को माँ दंतेश्वरी और देवी मावली की डोली विदाई जैसे आयोजनों को इस उत्सव की विशिष्ट धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का परिचायक बताया। उन्होंने मां दंतेश्वरी से बस्तरवासियों के उज्ज्वल भविष्य, छत्तीसगढ़ की प्रगति और समग्र विकास की कामना की।

मांझी और चालकियों का बढ़ा मानदेय : संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने मां दंतेश्वरी, मां मावली और बस्तर अंचल के समस्त ग्राम देवी-देवताओं को नमन करते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने कहा मांझियों का मासिक मानदेय 2,000 रुपये से बढ़ाकर 5,000 रुपये तथा चालकी का मानदेय 1,500 रुपये से बढ़ाकर 3,500 रुपये किया गया है। यह निर्णय बस्तर की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने वाले परंपरागत प्रतिनिधियों के योगदान के प्रति सम्मान और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, पर्यटन विकास और जनजातीय परंपराओं को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।

पाटजात्रा से देवी की...

कराता है, कोई रथ के लिए रस्सी तैयार करता है, तो कोई पूजा सामग्री, देवी-देवताओं के स्वागत, आरती और धार्मिक अनुष्ठानों का निर्वहन करता है।इस प्रकार बस्तर दशहरा केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वन संसाधनों का पारंपरिक उपयोग, लोक शिल्प, सामाजिक संगठन, महिला सहभागिता, जनसंवाद, सांस्कृतिक विरासत और सामूहिक श्रम का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। राष्ट्रपति ने प्रदर्शनी का तन्मयता के साथ अवलोकन किया और यहां की अनुपम लोक संस्कृति, सामाजिक समरसता और प्रकृति एवं आस्था के इस अद्भुत समन्वय की प्रशंसा की।

इस अवसर पर राज्यपाल रमेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल, वन मंत्री केदार कश्यप, सांसद एवं बस्तर दशहरा समिति के अध्यक्ष महेश कश्यप, कांकेर सांसद भोजराज नाग, विधायक किरण सिंह देव, महापौर संजय पाण्डे, मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत, कमिश्नर डोमन सिंह, आईजी बीएन मीणा, कलेक्टर आकाश छिकारा, एसपी शलभ सिन्हा सहित मांझी-चालकी, मेंबर-मेंबरिन, नाइक-पाइक और दशहरा समिति के सदस्य उपस्थित थे।

केशकाल के उमरादाह स्कूल में बिजली की समस्या से छात्र परेशान, शिक्षा व्यवस्था पर उठे सवाल

हरिभूमि न्यूज ⏭ केशकाल

विकासखंड के ग्राम उमरादाह स्थित प्राथमिक शाला में बिजली की समस्या के कारण विद्यार्थियों और शिक्षकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। देश और प्रदेश में शिक्षा के स्तर को सुधारने के बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में बिजली जैसी मूलभूत सुविधा का न होना प्रशासनिक दावों की पोल खोलता है।

विद्यालय में बिजली आपूर्ति सुचारु नहीं होने से कक्षाओं में रोशनी और पंखों का संचालन ठप पड़ा है। इसके चलते इस भीषण गर्मी और उमस में बच्चों का ध्यान पढ़ाई में केंद्रित नहीं हो पा रहा है। बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों को भी अध्यापन



कराने में काफी असुविधा झेलनी पड़ रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराना शिक्षा विभाग की प्राथमिक जिम्मेदारी है, लेकिन इस तरह की स्थिति बच्चों के भविष्य पर सवालिया निशान खड़े करती है।

ग्रामीण अंचल के बच्चों को समान अवसर प्रदान करने के लिए विद्यालयों में सुरक्षित भवन, पेयजल और निरंतर बिजली जैसी आवश्यकताएं अनिवार्य हैं। यदि तकनीकी खराबी या किसी अन्य कारण से बिजली आपूर्ति बाधित है, तो इसका तत्काल समाधान निकाला जाना चाहिए।

स्थानीय ग्रामीणों व अभिभावकों ने मांग की है कि शिक्षा विभाग और विद्युत विभाग संयुक्त रूप से विद्यालय का निरीक्षण कर समस्या का स्थायी निराकरण करें। अब देखने वाली बात यह होगी कि जिम्मेदार अधिकारी इस दिशा में कब तक ठोस कदम उठाते हैं, ताकि बच्चों की पढ़ाई बिना किसी बाधा के सुचारु रूप से जारी रह सके।



तापमान

अधिकतम 31.0 डिग्री

न्यूनतम 17.0 डिग्री

हरिभूमि

वनांचल भूमि

रायपुर, शनिवार 24 अक्टूबर 2026

बस्तर | दंतेवाड़ा | बीजापुर | सुकमा | कांकेर | कोण्डागांव | नारायणपुर

दशहरा के समापन पर काछन देवी की विदाई



जगदलपुर। बस्तर दशहरा के महत्वपूर्ण पारंपरिक विधानों में शामिल काछन जात्रा का आयोजन आज पथरागुड़ा मार्ग स्थित ऐतिहासिक काछनगुड़ी मंदिर में हुआ। इस दौरान विधि-विधान से काछन देवी की पूजा-अर्चना कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। इस विधान में देवी से क्षेत्र की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली की कामना की गई। बस्तर दशहरा की परंपराओं में काछन देवी का विशेष महत्व है। मान्यता है कि दशहरा पर्व की शुरुआत में देवी का आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है, ताकि उत्सव निर्विघ्न संपन्न हो।

विकसित भारत बनाने में बस्तर का रहेगा अहम योगदान : राष्ट्रपति मुर्मू

हरिभूमि न्यूज ⏭ जगदलपुर

पेड़ पौधे साक्षात भगवान के रूप, उनकी रक्षा करने का दायित्व निभाएं आदिवासी





राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने यहां के लालबाग मैदान में जनसभा को संबोधित करते कहा कि बस्तर दण्डकारण्य में शामिल है। यहां भगवान राम का आगमन हुआ था, वाल्मिकी रामायण में इसका वर्णन है। यहां का जनजातीय समाज उनके साथ कभी मिले होंगे। भगवान राम के यहां पद पड़े इसलिए यहां की मिट्टी पवित्र है, इसलिए इसकी पवित्रता को बनाएं रखना आपका कर्तव्य है। उन्होंने राक्षसों से लोगों को मुक्ति दिलाई थी, रामायण में के व ल हनुमान और ऋषि महर्षि का वर्णन है।

- भगवान राम के साथ जनजाति समाज का राक्षसों और रावण को परास्त करने में योगदान

मैं मानती हूं, उस समय जंगल में रहने वाले जनजातीय समाज का भी राक्षसों और रावण को परास्त करने में योगदान रहा होगा। दण्डकारण्य क्षेत्र में सीता अपहरण में शबरी का प्रसंग मिलता है, शबरी जनजातीय समाज की थी। राष्ट्रपति ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ के सामने विकास के अनेक द्वार खुल रहे हैं। आंतक की पीड़ा पीछे छूट गई है। मुझे विसवास है कि 2047 में विकसित भारत में छत्तीसगढ़ और बस्तर का अहम योगदान रहेगा। उन्होंने कहा कि हरा भरा बस्तर आदिवासियों के जीवन का अभिन्न अंग है। पेड़ पौधे साक्षात भगवान है, क्योंकि वह हमें फल, फूल, वायु और बहुत सारे चीजे देते हैं, इसलिए हमारा कर्तव्य है कि पेड़ पौधे की रक्षा करें। एक पेड़ तैयार होने ⏭शेष पेज 10 पर

माओवाद से मुक्त बस्तर में अब नवनिर्माण और विकास की बारी : मुख्यमंत्री साय

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि राष्ट्रपति का बस्तर की धरती से गहरा जुड़ाव रहा है। इसी वर्ष फरवरी में उन्होंने बस्तर पंडुम का शुभारंभ किया था। इसके बाद बस्तर पंडुम के विजेताओं को सम्मानित करने के साथ राष्ट्रपति भवन आमंत्रित कर उनका उत्साहवर्धन भी किया। बस्तर दशहरा में उनकी उपस्थिति से समस्त बस्तरवासियों का उत्साह बढ़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस वर्ष बस्तर दशहरा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक ओर राष्ट्रपति की गरिमामय उपस्थिति से उत्सव की प्रतिष्ठा बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर बस्तर हिंसक माओवाद से मुक्त होकर नवनिर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहा है। बस्तर पंडुम और बस्तर ओलंपिक जैसे आयोजन इस परिवर्तन को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बस्तर पंडुम के माध्यम से यहां की समृद्ध जनजातीय कला, संस्कृति और परंपराओं को देश-विदेश तक पहुंचाया जा रहा है। राज्य सरकार ने बस्तर की समृद्धि और विकास के लिए स्पष्ट रोडमैप तैयार किया है। नियद नेल्लानार योजना के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों तक शासकीय योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत अंदरूनी बसाहटों को सड़क मार्ग से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ग्रामीण बस योजना के माध्यम से परिवहन सुविधाओं के विस्तार के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि रायपुर से रावघाट तक नई रेल सेवा प्रारंभ की गई है तथा रावघाट-जगदलपुर रेल लाइन पर कार्य जारी है। रायपुर से विशाखापट्टनम एक्सप्रेसवे का बड़ा हिस्सा बस्तर क्षेत्र से गुजरता है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए होम-स्टे की व्यवस्था हेतु विशेष प्रावधान किए गए हैं। वन धन केंद्रों के माध्यम से वनोपज संग्राहकों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जगदलपुर में सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल प्रारंभ किया गया है तथा गीदम में मेडिकल कॉलेज इसी शैक्षणिक सत्र से शुरू हो गया है। ओरछा और जगरगुंडा में एजुकेशन सिटी विकसित करने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राष्ट्रपति के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से बस्तर को देश का अग्रणी संभाग बनाने तथा विकसित छत्तीसगढ़ के संकल्प को पूरा करने के प्रयासों को नई मजबूती मिलेगी।

सामाजिक निर्णय मिल-बैठकर लेने की परम्परा : राज्यपाल

राज्यपाल रामेन डेका ने कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और लोकतांत्रिक मूल्य हमारी सभ्यता एवं संस्कारों में गहराई से रचे-बसे हैं। उन्होंने कहा सामूहिकता जनजातीय समाज की जीवन पद्धति का अभिन्न हिस्सा है। गांवों में सामाजिक निर्णय मिल-बैठकर लिए जाते हैं। बड़ों की बात सुनना और प्रत्येक व्यक्ति की आवाज को सम्मान देना जनजातीय समाज की सहज परंपरा रही है। राज्यपाल ने कहा कि बस्तर दशहरा अपनी भव्यता के साथ समाज को साथ लेकर चलने की सीख भी देता है। रथ के लिए लकड़ी लाने से लेकर उसके निर्माण और संचालन तक विभिन्न गांवों एवं समुदायों के लोग अपनी निर्धारित जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। राजशाही की समाप्ति के बाद भी यह परंपरा निरंतर जारी रही और जनतांत्रिक संवाद के सशक्त मंच के रूप में विकसित हुई। उन्होंने कहा कि बस्तर दशहरा और मुरिया दरबार यह संदेश देते हैं कि संवाद ही समाधान का मार्ग है। जब शासन और समाज आमने-सामने बैठकर चर्चा करते हैं, तब कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। उन्होंने मांझी, मुखिया, पुजारी, कारीगरों, रथ निर्माताओं, कलाकारों और स्थानीय प्रशासन सहित उन सभी लोगों के योगदान की सराहना की, जिनके सामूहिक परिश्रम और श्रद्धा से यह विश्वप्रसिद्ध परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित है।



राष्ट्रपति ने मां दंतेश्वरी की पूजा-अर्चना की

जगदलपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू एयरपोर्ट से सीधे दंतेश्वरी मंदिर पहुंचकर मां दंतेश्वरी की पूजा-अर्चना की। उन्होंने देशवासियों की सुख-समृद्धि, खुशहाली और मंगलमय जीवन की कामना की। इस अवसर पर राज्यपाल रमेन डेका और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी उपस्थित थे।

- देशवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना

पाटजात्रा से देवी की विदाई तक विधानों से प्रभावित हुई राष्ट्रपति

जगदलपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बस्तर दशहरा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जनजातीय परंपराओं और सदियों पुरानी धार्मिक मान्यताओं पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। लालबाग मैदान में आयोजित प्रदर्शनी में बस्तर दशहरा की विभिन्न विधाओं, पारंपरिक पूजा-अनुष्ठानों, रथ निर्माण की विशिष्ट तकनीक, देवी-देवताओं की आराधना, जनजातीय समुदायों की भागीदारी और ऐतिहासिक परंपराओं को आकर्षक चित्रों एवं विस्तृत विवरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शनी में बस्तर दशहरा के प्रारंभ से समापन तक संपन्न होने वाले प्रमुख अनुष्ठानों को क्रमबद्ध रूप से दर्शाया गया।

इसमें पाट जात्रा, डेरी गड़ाई, बारसी उतरानी, नार फोड़नी, रथ निर्माण, काछिन गादी, कलश स्थापना, जोगी बिठाई, फूल रथ



परिक्रमा, बेल निवता, निशा जात्रा, मावली परघाव, भीतर रैनी, बाहर रैनी, मुरिया दरबार तथा कुटुम्ब जात्रा जैसी विशिष्ट परंपराओं का समावेश किया गया। दशहरा प्रदर्शनी में यह विशेष रूप से रेखांकित किया गया कि महापर्व के आयोजन में विभिन्न जनजातीय एवं स्थानीय समुदायों की परंपरागत जिम्मेदारियां निर्धारित हैं। कोई समुदाय रथ निर्माण करता है, कोई लकड़ी उपलब्ध ⏭शेष पेज 10 पर





खबर संक्षेप

मृतक के परिवार को मिले 50 लाख और घायल को 25 लाख



जगदलपुर। दशहरा के दौरान हुए हादसे को लेकर बस्तर अधिकार मुक्ति मोर्चा एवं जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) के बस्तर ग्रामीण जिला अध्यक्ष संतु कश्यप ने दुख व्यक्त करते हुए शासन-प्रशासन से पीड़ित परिवारों को उचित मुआवजा, रोजगार और न्याय प्रदान करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि मृतक के परिवार को 50 लाख मुआवजा परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए। वहीं घायल को 25 लाख मुआवजा दिया जाए।

औद्योगिक परियोजनाओं में स्थानीय को मिले रोजगार



जगदलपुर। बस्तर अधिकार मुक्ति मोर्चा के मुख्य संयोजक एवं जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) के प्रदेश उपाध्यक्ष नवनीत चांद ने जारी बयान में कहा कि छत्तीसगढ़ गठन के बाद 26 वर्षों में बस्तर में औद्योगिक गतिविधियां बढ़ी हैं, लेकिन स्थानीय रोजगार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, सिंचाई और पुनर्वास के वास्तविक परिणामों का सार्वजनिक आकलन जरूरी है। बस्तर का विकास केवल खनिज उत्पादन और निवेश से नहीं, बल्कि स्थानीय जनता को मिले लाभ से मापा जाए। 5वीं अनुसूची, पेसा अधिनियम और वन अधिकार अधिनियम के लागू प्रावधानों का पालन सुनिश्चित हो। स्थानीय रोजगार एवं औद्योगिक जवाबदेही नगरनार स्टील प्लांट और अन्य उद्योगों में स्थानीय युवाओं की नियमित भर्ती, रिक्त पदों तथा ठेका श्रमिकों के आंकड़े सार्वजनिक हों। स्थानीय व्यवसायियों और उद्यमियों को पारदर्शी अवसर मिलें।

सेमेस्टर परीक्षा की आवेदन की तिथि 30 तक बढ़ी

जगदलपुर। शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर द्वारा सत्र 2026-27 की सेमेस्टर परीक्षा जुलाई-दिसम्बर 2026 में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों के लिए ऑनलाइन परीक्षा फॉर्म भरने की तिथि 30 अक्टूबर तक बढ़ा दी गई है। विश्वविद्यालय अध्ययनशालाओं एवं समस्त संबद्ध महाविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर तथा डिप्लोमा कक्षाओं के नियमित, स्वाध्यायी, भूतपूर्व एवं एटीकेटी परीक्षार्थी 30 अक्टूबर तक आनलाइन आवेदन कर सकेंगे एवं 31 अक्टूबर तक अध्ययनशालाओं एवं संबद्ध महाविद्यालयों में आनलाइन आवेदन की हार्ड कॉपी एवं आवश्यक दस्तावेज जमा कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय ने नामांकन आवेदन की तिथियां बढ़ाईं

जगदलपुर। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर जगदलपुर द्वारा सत्र 2026-27 के लिए स्नातक, स्नातकोत्तर तथा डिप्लोमा कक्षाओं के नियमित एवं स्वाध्यायी विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन नामांकन की संशोधित तिथि जारी कर दी गई है। जिन विद्यार्थियों का नामांकन अब तक नहीं हो पाया था, उनके लिए विश्वविद्यालय ने एक अंतिम अवसर प्रदान किया है। विद्यार्थी विलंब शुल्क के साथ 26 से 30 अक्टूबर तक ऑनलाइन नामांकन फॉर्म भर सकते हैं।

मां दंतेश्वरी एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति का आत्मीय स्वागत...



राज्यपाल, मुख्यमंत्री सहित उप मुख्यमंत्री एवं जनप्रतिनिधियों ने किया स्वागत

जगदलपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का मां दंतेश्वरी एयरपोर्ट में आत्मीय स्वागत किया गया। राज्यपाल रमेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, कृषि मंत्री राम विचार नेताम, वन मंत्री केदार कश्यप, संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल, सांसद महेश कश्यप, सांसद कांकेर भोजराज नाग, महापौर संजय पांडेय सहित प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों ने उनका स्वागत किया।

मलिगुड़ा-जराती रेल खंड पर बहाली कार्य पूरा, मालगाड़ियों का परिचालन शुरू

कोरापुट-किरन्दुल रेल लाइन पर महीने भर बाद पटरी पर दौड़ी ट्रेन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

ईस्ट कोस्ट रेलवे ने कोरापुट-किरन्दुल रेल खंड के मलिगुड़ा क्षेत्र में भूस्खलन से प्रभावित सभी तीन स्थानों पर ट्रैक बहाली का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह रेल मार्ग बीते 24 सितंबर से बंद

- डीआरएम ने कहा सुरक्षा जांच के बाद बहाल होंगी यात्री सेवाएं





था, जिससे बस्तर और आसपास के क्षेत्रों में रेल सेवाएं पूरी तरह ठप हो गई थीं। बुधवार रात को काम पूरा होने के बाद रेलवे ने निर्धारित सुरक्षा सावधानियों और कड़ी निगरानी के बीच सीमित गति से मालगाड़ियों के संचालन की अनुमति दे दी है। डीआरएम ने कहा कि यात्री ट्रेनों का परिचालन रेल ट्रैक, बुनियादी ढांचे और अन्य सुरक्षा मानकों के पूर्ण मूल्यांकन और सुरक्षा मंजूरी मिलने के बाद ही शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि रेलवे के लिए सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिए बिना किसी समझौते के सुरक्षित और व्यवस्थित तरीके से ट्रेनों का संचालन बहाल करने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। भूस्खलन की घटना के बाद से ही ईस्ट कोस्ट रेलवे के प्रधान मुख्य अभियंता राजेश शेखावत और मंडल रेल प्रबंधक अमिताभ सिंघल सहित अन्य विभागीय अधिकारी दिन-रात प्रभावित स्थलों पर डटे रहे। उन्होंने उच्चतम सुरक्षा मानकों को बनाए रखते हुए काम को जल्द पूरा करने के लिए व्यक्तिगत रूप से निगरानी की। इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल और सिग्नल एंड टेलीकॉम विभागों की टीमों ने लाइनों को बहाल करने के लिए चौबीसों घंटे काम किया।

महाप्रबंधक ने लिया जायजा

ईस्ट कोस्ट रेलवे के महाप्रबंधक परमेश्वर फुंकवाल ने भूस्खलन प्रभावित मलिगुड़ा क्षेत्र का निरीक्षण किया और युद्ध स्तर पर चल रहे कार्यों की समीक्षा की। फुंकवाल ने मौके पर मौजूद अधिकारियों को हर स्तर पर सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए खंड की जल्द बहाली को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए थे। मलिगुड़ा रेल पुल के पास और मलिगुड़ा स्टेशन यार्ड में भूस्खलन से ट्रैक प्रभावित हुआ था। बस्तर और आसपास के लोगों के लिए परिवहन के इस महत्वपूर्ण साधन के बंद होने से जनता को हुई असुविधा को देखते हुए रेलवे ने संवेदनशीलता के साथ त्वरित प्रयास किए हैं। प्रभावित खंड पूरी तरह सुरक्षित घोषित होते ही यात्री सेवाएं भी बहाल कर दी जाएंगी।

मांझी-चालकियों के साथ बैठकर विशेष भोज में शामिल हुईं राष्ट्रपति



हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने लालबाग मैदान में आमसभा के उपरांत विशेष भोज में बस्तर की पारंपरिक प्रशासनिक व्यवस्था के प्रमुख अंग मांझी-चालकी और मेंबर-मेंबरिन के साथ बैठकर भोजन किया। उन्होंने सहजता व आत्मीयता के साथ संवाद कर उनका कुशलक्षेम जाना। इस अवसर पर राज्यपाल रमेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, वन मंत्री केदार कश्यप, कृषि मंत्री राम विचार नेताम, शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव, महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाडे, बस्तर सांसद एवं बस्तर दशहरा समिति के अध्यक्ष महेश कश्यप, कांकेर सांसद भोजराज नाग, विधायक किरण सिंह देव, सुश्री लता उसेंडी, नीलकण्ठ टेकाम, महापौर संजय पाण्डेय मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत, सचिव संस्कृति डा एस भारतीदासन, कमिश्नर डोमन सिंह, आईजी बीएन मीणा, कलेक्टर आकाश छिकारा, एसपी शलभ सिन्हा सहित बस्तर दशहरा समिति के सदस्य तथा बस्तर पंडुम के विजेता प्रतिभागी भी रहे।

सुरक्षा के लिए बनेंगे 22 पेट्रोलिंग कैंप, दिन-रात होगी निगरानी

नक्सल साया हटा, इंद्रावती टाइगर रिजर्व के जंगलों में हो रही पेट्रोलिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

बरसों तक नक्सलवाद के साये में रहे बीजापुर के इंद्रावती टाइगर रिजर्व में अब जंगल और वन्यजीवों की सुरक्षा को लेकर नई उम्मीद जगी है। सुरक्षा परिस्थितियों में सुधार के बीच वन विभाग ने जंगल की निगरानी तेज कर दी है। वन्यजीवों के शिकार, पेड़ों की अवैध कटाई और वन संपदा की लूट पर लगाम कसने के लिए मैदानी अधिकारियों और कर्मचारियों को दिन के साथ रात में भी पेट्रोलिंग पर लगाया जा रहा है। जंगल के भीतर सुरक्षा का दायरा बढ़ाने के लिए 7-7 किमी में लगभग 22 पेट्रोलिंग सुरक्षा कैंप स्थापित करने की तैयारी है। इन कैंपों के जरिए दुर्गम इलाकों तक वन अमले की पहुंच बढ़ाने और संवेदनशील क्षेत्रों में निगरानी मजबूत करने की योजना है। इंद्रावती टाइगर रिजर्व का विशाल वन क्षेत्र जैव विविधता और वन्यजीवों की मौजूदगी के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है। यहां वन्यजीवों को सुरक्षित प्राकृतिक वातावरण देना और उनके रहवास को बचाए रखना वन विभाग के सामने बड़ी



चुनौती है। नक्सल प्रभावित परिस्थितियों के कारण जिन इलाकों में नियमित निगरानी कठिन रही, वहां अब सुरक्षा व्यवस्था बेहतर होने के साथ वन संरक्षण की गतिविधियों को गति देने की संभावनाएं बढ़ी हैं।

वन विभाग के मैदानी अमले की दिन और रात की पेट्रोलिंग का मकसद जंगल में होने वाली संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखना है। इसमें अवैध शिकार और पेड़ों की कटाई जैसी गतिविधियों को समय रहते पहचानकर रोकना महत्वपूर्ण होगा। जंगलों में लगातार मौजूदगी से वन अपराधों पर अंकुश लगाने और वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास को सुरक्षित रखने में मदद मिलने की उम्मीद है। हालांकि कैंपों की वास्तविक प्रभावशीलता उनके स्थान, कर्मचारियों की तैनाती, संचार सुविधाओं और नियमित गश्त पर निर्भर करेगी। जंगल का क्षेत्र विशाल होने के कारण केवल कैंप स्थापित करना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि उन्हें सक्रिय और संसाधनयुक्त बनाए रखना भी जरूरी होगा।

टाइगर रिजर्व में करीब 22 पेट्रोलिंग सुरक्षा कैंप स्थापित करने की तैयारी को वन सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है। जंगल के अलग-अलग हिस्सों में कैंप बनने से गश्ती दलों को ठहराव और निगरानी के लिए आधार मिल सकेगा।

अवैध गतिविधियों पर लगेगी रोक

इंद्रावती टाइगर रिजर्व बीजापुर के क्षेत्रीय निदेशक उत्तम कुमार गुप्ता ने बताया कि आईटीआर में वन सुरक्षा मजबूत करने की यह पहल इसलिए भी अहम है, क्योंकि जंगलों का संरक्षण केवल पेड़ों को बचाने तक सीमित नहीं है। वन्यजीवों का सुरक्षित विचरण, प्राकृतिक आवास की रक्षा और शिकारियों पर प्रभावी नियंत्रण भी इसके प्रमुख हिस्से हैं। दिन-रात पेट्रोलिंग और प्रस्तावित सुरक्षा कैंप इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नियमित निगरानी, त्वरित कार्रवाई और वन अमले को जरूरी सुविधाएं मिलने से ही जंगल में अवैध गतिविधियों पर प्रभावी रोक लग सकेगी।

जयदेव बाबा का सेवा भाव दशहरा की परंपराओं को दे रहा नई ऊर्जा : मांझी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

बस्तर दशहरा केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आस्था, परंपरा, सामाजिक समरसता और जनभागीदारी का अद्भुत संगम है। 75 दिनों तक चलने वाले इस ऐतिहासिक पर्व में जहां

- रथ निर्माण के कारीगरों, मांझी-चालकी, सिरहा-गुनिया और पुजारी गणों के लिए भोजन, जलपान एवं ठहरने की व्यवस्था सराहनीय



विभिन्न रस्मों और परंपराओं का निर्वहन किया जाता है, वहीं इससे जुड़े सेवाभावी लोगों का योगदान भी विशेष महत्व रखता है। सुकमा जमींदार परिवार से कुमार जयदेव दशहरा पर्व के दौरान सेवादारों, रथ निर्माण में जुटे कारीगरों, मांझी-चालकी, सिरहा-गुनिया और पुजारी गणों के लिए भोजन, जलपान एवं ठहरने की व्यवस्था करते है। उनके इस निस्वार्थ सेवा भाव की बस्तर दशहरा समिति के उपाध्यक्ष बलराम मांझी ने सराहना करते हुए कहा कि जयदेव उनका समर्पण और सेवाभाव प्रशंसनीय है। उन्होंने बताया कि दशहरा पर्व के दौरान अंसख्य देव-देवताओं के साथ उनके सेवादार भी पहुंचते हैं।

शासन की ओर से उनके लिए राशन और ठहरने की व्यवस्था की जाती है, लेकिन किन्हीं कारणों से जिन लोगों तक यह सुविधाएं नहीं पहुंच पातीं, उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कुमार बाबा अपनी ओर से व्यवस्था कर रहे हैं। यह उनकी संवेदनशीलता और सेवा के प्रति समर्पण को दर्शाता है। बलराम मांझी ने कहा कि धन-संपत्ति तो बहुत लोगों के पास होती है, लेकिन उसे दूसरों की सेवा में लगाने की इच्छा और निस्वार्थ भाव हर किसी में नहीं होता। यह विशेषता जयदेव बाबा में देखने को मिलती है। वे दशहरा ही नहीं, बल्कि अन्य धार्मिक आयोजनों और पूजा-पाठ के कार्यों में भी हमेशा समाज के लोगों के साथ खड़े रहते हैं और हर संभव सहयोग प्रदान करते हैं। उन्होंने बताया कि बाबा ने हम लोगों का सम्मान किया।

बलराम मांझी ने कहा कि यह राष्ट्रपति का मुरिया दरबार में आगमन पूरे बस्तर के लिए गर्व का विषय है। यह अवसर बस्तर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जनजातीय परंपराओं और ऐतिहासिक पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण अवसर होगा।

चेंदरु और टेम्बू की दोस्ती से जगेगा बाघ संरक्षण का जज्बा

इंद्रावती टाइगर रिजर्व के गांवों में ग्रामीणों को वन्यजीवों की सुरक्षा से जोड़ने की पहल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

बस्तर के जंगलों में कभी चेंदरु और उसके बाघ मित्र टेम्बू की दोस्ती की कहानी ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा था। अब यही ऐतिहासिक कहानी इंद्रावती टाइगर रिजर्व बीजापुर में बाघ संरक्षण की नई मुहिम का आधार बन रही है। वन विभाग ने ग्रामीणों को वन्यजीवों और जंगलों की सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए भावनात्मक जुड़ाव का रास्ता चुना है। बस्तर के 'मोगली' के नाम से मशहूर चेंदरु और उसके बाघ मित्र टेम्बू की यादों को जीवंत कर ग्रामीणों के बीच संरक्षण का संदेश पहुंचाया जा रहा है। चेंदरु और टेम्बू की दोस्ती बस्तर की पहचान से जुड़ी ऐसी कहानी है, जिससे यहां की कई पीढ़ियां परिचित हैं। वन विभाग इसी आत्मीय रिश्ते को माध्यम बनाकर लोगों को समझा रहा है कि बाघ केवल जंगल का एक वन्यजीव नहीं, बल्कि प्रकृति के संतुलन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जंगल सुरक्षित रहेंगे, तभी वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास भी सुरक्षित रहेगा। इस अभियान में आकर्षक चित्रों और सरल नारों का सहारा



लिया जा रहा है। 'मैं चेंदरु का दोस्त टेम्बू हूं, इंद्रावती टाइगर रिजर्व का जंगल मेरा घर है' जैसे संदेश ग्रामीणों को बाघों के प्रति अपनापन महसूस कराने के साथ उनके संरक्षण की जिम्मेदारी का अहसास करा रहे हैं।

भावनाओं से जुड़ेगा संरक्षण का संदेश

इंद्रावती टाइगर रिजर्व में चेंदरु और टेम्बू की कहानी का उपयोग यह बताता है कि वन्यजीव संरक्षण के लिए केवल नियमों और निर्देशों के बजाय स्थानीय संस्कृति, स्मृतियों और भावनात्मक जुड़ाव को भी माध्यम बनाया जा सकता है। परिचित चेहरे और कहानी से जुड़ा संदेश लोगों तक आसानी से पहुंचता है। बस्तर की इस ऐतिहासिक दोस्ती को संरक्षण अभियान से जोड़कर वन विभाग जंगल और इंसान के रिश्ते को मजबूत करने की कोशिश कर रहा है।

संरक्षण में ग्रामीणों की सहभागिता पर जोर

इंद्रावती टाइगर रिजर्व बीजापुर के क्षेत्रीय निदेशक उत्तम कुमार गुप्ता के अनुसार रिजर्व को सुरक्षित रखने के लिए स्थानीय ग्रामीणों का सहयोग सबसे महत्वपूर्ण है, जब तक ग्रामीण जंगलों और वन्यजीवों को अपना नहीं मानेंगे, तब तक पूर्ण संरक्षण संभव नहीं है। चेंदरु और टेम्बू की पुरानी यादों को ताजा कर वन विभाग ने स्थानीय संस्कृति और जनभावनाओं को संरक्षण के कार्य से जोड़ दिया है, जिसकी पूरे बस्तर क्षेत्र में जमकर सराहना हो रही है।

गांवों के दीवारों में चित्र से बनेगा विश्वास

इंद्रावती टाइगर रिजर्व के अधिकारी और कर्मचारी गांव-गांव पहुंचकर दीवारों में चित्र बना रहे हैं। इस तरह से ग्रामीणों को जंगलों के महत्व, वन्यजीव संरक्षण और बाघों के प्राकृतिक आवास को सुरक्षित रखने की जरूरत समझाई जा रही है। स्थानीय लोगों से सीधे मिलकर संरक्षण को केवल विभागीय जिम्मेदारी तक सीमित न रखकर जनभागीदारी से जोड़ना है। वन विभाग की यह पहल ग्रामीणों और मैदानी अमले के बीच बेहतर तालमेल स्थापित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण है। स्थानीय लोगों का सहयोग मिलने से जंगलों और वन्यजीवों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

